

श्री भरत-बाहुबली पूजन

(डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल कृत)

(स्थापना)

(कुण्डलिया)

भरत और बाहुबली, वीतराग-सर्वज्ञ।

हित-उपदेशक लोक में, नमें तुम्हें मर्मज्ञ॥

नमें तुम्हें मर्मज्ञ आतमा के आराधक।

सम्यग्ज्ञानी जीव आतमा के जो साधक॥

अज्ञानीजन अरे आपको ना पहिचानें।

सम्यग्दृष्टि जीव जिनेश्वर तुमको जानें॥१॥

ॐ ह्रीं श्री भरत-बाहुबलिस्वामिनौ अत्र अवतरत-अवतरत संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री भरत-बाहुबलिस्वामिनौ अत्र तिष्ठत-तिष्ठत ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्री भरत-बाहुबलिस्वामिनौ अत्र मम सन्निहितौ भवत-भवत वषट् ।

(रेखता)

जल

प्रभो ! यह निर्मल जल अम्लान आपके चरणों में अर्पित।

प्यास की बाधा होवे शान्त होय हमको आतम अनुभव॥

भरत-बाहुबलि हे जिनराज! आपकी महिमा अपरम्पार।

आपने जीते आठों कर्म आप हो गये भवोदधि पार ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री भरतबाहुबलिस्वामिभ्यां जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं
निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

प्रभो ! शीतल चन्दन अनुपम आपको अर्पण करता हूँ।

कषायों की गर्मी हो शान्त और जीवन में हो संयम॥

भरत-बाहुबलि हे जिनराज! आपकी महिमा अपरम्पार।

आपने जीते आठों कर्म आप हो गये भवोदधि पार ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री भरतबाहुबलिस्वामिभ्यां संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि. स्वाहा।

अक्षत

अनोखे अक्षत अक्षत हैं आपको करते हम अर्पण।
अरे अक्षय पद की हो प्राप्ति विकारों का होवे तर्पण॥
भरत-बाहुबलि हे जिनराज! आपकी महिमा अपरम्पार।
आपने जीते आठों कर्म आप हो गये भवोदधि पार ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं श्री भरतबाहुबलिस्वामिभ्यां अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

प्रभो ! अत्यन्त मनोहर पुष्प कल्पतरु से हम लाये हैं।
और होकर हम विषय-विरक्त चरण वन्दन को आये हैं॥
भरत-बाहुबलि हे जिनराज! आपकी महिमा अपरम्पार।
आपने जीते आठों कर्म आप हो गये भवोदधि पार ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं श्री भरतबाहुबलिस्वामिभ्यां कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवैद्य

क्षुधानाशक मधुरिम पक्वान्न कहे जाते हैं दुनियाँ में।
किये सेवन हमने भरपूर क्षुधा न शान्त हुई अबतक॥
भरत-बाहुबलि हे जिनराज! आपकी महिमा अपरम्पार।
आपने जीते आठों कर्म आप हो गये भवोदधि पार ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं श्री भरतबाहुबलिस्वामिभ्यां क्षुधारोगविनाशनाय नेवैद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

प्रभो! हो अन्धकार का नाश दीप रत्नों के लाये हैं।
किन्तु मोहान्धकार का नाश नहीं होता इनसे जग में॥
भरत-बाहुबलि हे जिनराज! आपकी महिमा अपरम्पार।
आपने जीते आठों कर्म आप हो गये भवोदधि पार ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं श्री भरतबाहुबलिस्वामिभ्यां मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

सुगन्धित द्रव्यों से निर्मित धूप लेकर हम आये हैं।
आज तक एक कर्म भी नाश नहीं इससे कर पाये हैं॥
भरत-बाहुबलि हे जिनराज! आपकी महिमा अपरम्पार।
आपने जीते आठों कर्म आप हो गये भवोदधि पार ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं श्री भरतबाहुबलिस्वामिभ्यां अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

मुक्तिफल पाने को हे नाथ! मधुर फल लेकर आये हैं।
अफल ही सिद्ध हुये ये सभी मुक्ति के न मिल पाने से॥
भरत-बाहुबलि हे जिनराज! आपकी महिमा अपरम्पार।
आपने जीते आठों कर्म आप हो गये भवोदधि पार ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं श्री भरतबाहुबलिस्वामिभ्यां मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

अनर्घपद की आशा से प्रभो! सभी द्रव्यों को शामिल कर।
अरे यह अर्घ्य बनाकर नाथ! अनेकों बार चढ़ाया है॥
भरत-बाहुबलि हे जिनराज! आपकी महिमा अपरम्पार।
आपने जीते आठों कर्म आप हो गये भवोदधि पार ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं श्री भरतबाहुबलिस्वामिभ्यां अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

मोक्ष गये युग आदि में, भरत-बाहुबलि नाथ !।
उनकी पूजन भक्ति से, जीवन हुआ सनाथ ॥ १ ॥

(रेखता)

भरत-बाहुबलि का जीवन देखकर धन्य हो गये हम।
अरे उनके जैसा जीवन दिखाई दिया हमें न अन्य॥
अरे वे जब दोनों ही भाई साथ में घर में रहते थे।
उनमें था अपार स्नेह और थे दो देहों में एक॥ २ ॥

साथ में खेला करते थे साथ में खाया करते थे।
कहीं भी जाना हो तो भाई ! साथ में जाया करते थे॥
अरे हम दोनों के ही भगत और दोनों के गायक हैं।
आप दोनों ही भाई नाथ ! अरे हम सबके नायक हैं ॥३॥

आपने बतलाया सबको सभी अपने-अपने नायक।
न कोई नायक गायक है सभी के सब बस ज्ञायक हैं॥
आप जबतक इस घर में रहे अरे अविरतसमदृष्टि रहे।
यद्यपि थे क्षायिकसमदृष्टि किन्तु अणुव्रत धारण न करे ॥ ४ ॥

क्योंकि अरे शलाकापुरुष कभी अणुव्रत धारण न करें।
अरे वे जब भी धारण करें महाव्रत ही वे धारण करें॥
आप दोनों पौरुष के पिण्ड नहीं थी शक्ति की कोई कमी।
नहीं थी कोई कमजोरी अरे फिर अणुव्रत क्यों धारें॥ ५ ॥

आपने जब संयम धारा अरे निज पौरुष के बल से।
और जब हुये ध्यान में खड़े तो बाहर को झाँके ही नहीं ॥
भले ही एक वर्ष लग गया बाहुबलि आसन से न डिगे।
भरत तो अन्तर में जब गये, गये फिर बाहर आये नहीं ॥६॥

अरे इस अद्भुत जोड़ी की होड़ कोई कर सकता नहीं ।
अरे दोनों भाई बेजोड़ होड़ की बात नहीं कोई ॥
अरे दोनों पौरुष के पिण्ड अलौकिक संयमधारी थे ।
कहाँ तक उनकी महिमा करें परम संयम के धारी थे ॥ ७ ॥

आपने किये घातिया नाश आप अरहन्त हो गये हैं ।
हुये हैं पूर्ण वीतरागी आप सर्वज्ञ हो गये हैं ॥
आपके द्वारा दुनिया को मिला था हितकारी उपदेश ।
इसलिये हे जिनवर भगवान ! आप भी थे देवों के देव ! ॥८॥

आठ गुण से मण्डित हे नाथ ! आप जयवन्त हो गये हैं ।
अनन्तानन्द ज्ञान के पिण्ड सिद्ध भगवन्त हो गये हैं ॥
अनन्त दर्शन अनन्त वीरज अनन्तानन्त ज्ञानमय आप ।
सदा सुख भोगेंगे हे प्रभो ! अनन्तानन्त कालतक आप ॥ ९ ॥

(दोहा)

भरत और बाहुबली, होगय भव से पार ।
और हमारा भी प्रभो ! शेष नहीं संसार ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्री भरतबाहुबलिस्वामिभ्यां जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(सोरठा)

यह असार संसार, अरे आपकी कृपा से ।
हम होंगे भव पार, अल्पकाल में ही प्रभो ॥ ११ ॥

(इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

